३. वाणी-विवेक

जैनदृष्टि से यह आत्मा अनन्त काल तक निगोद अवस्था में रहा। जहाँ पर एक औदारिक शरीर के आश्रित अनन्त जीव रहते हैं। यह आत्मा की पूर्ण अविकसित अवस्था है। अकाम निर्जरा के द्वारा जब आत्मा पुण्यवानी का पुञ्ज एकत्र करता है तब वह वहाँ से पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय और वायुकाय में आता है। और वहाँ पर वह आत्मा असंख्यात काल तक रहता है। इन पाँचों निकाय में केवल एक इन्द्रिय होती है और उस इन्द्रिय का नाम है—स्पर्श इन्द्रिय। केवल स्पर्श इन्द्रिय के द्वारा ही उन आत्माओं की चैतन्य शक्ति अभिव्यक्त होती है। इन पाँचों निकायों में आत्मा अपार वेदनाओं का अनुभव करता रहा किन्तु उस अनुभूति को अभिव्यक्त करने के लिए उसके पास स्पर्श इन्द्रिय के अतिरिक्त कोई माध्यम नहीं था।

जब भयंकर शीत ताप प्रभृति वेदनाएँ भोगते-भोगते कर्म दलिक निर्जरित होते हैं और पुण्य का प्रभाव बढ़ता है तब आत्मा को द्वितीय इन्द्रिय प्राप्त होती है। उस इन्द्रिय का नाम है रसना इन्द्रिय, रसना इन्द्रिय की उपलब्धि द्वीन्द्रिय अवस्था में हो जाती है और वह उसका उपयोग वस्तु के आस्वादन हेतु तथा अव्यक्त स्वर के रूप में करता है। उसकी वाणी अविकसित होती है। तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय, असंज्ञीपंचेन्द्रिय और संज्ञीपंचेन्द्रिय तक इन्द्रियों का विकास होता है तथापि इन्द्रियों में जो तेजस्विता, उपयोगिता होनी चाहिये वह नहीं हो पाती। नारकीय जीव, तिर्यञ्च जीव भी पञ्चेन्द्रिय संज्ञी हैं किन्तु मानव की भाँति वे इन्द्रियों का सदुपयोग जन जन के कल्याण के हेतु नहीं कर पाते। मानव इन्द्रियों का सदुपयोग भी कर सकता है और दुरुपयोग भी कर सकता है। इन्द्रियों का सदुपयोग कर वह साधना के सर्वोच्च शिखर को प्राप्त कर सकता है और दुरुपयोग कर नरक और निगोद की भयंकर वेदनाओं की भी प्राप्त कर सकता है।

मैं इस समय अन्य इन्द्रियों के सम्बन्ध में चिंतन न कर रसना इन्द्रिय के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करने जा रही हूँ। अन्य चार इन्द्रियों का कार्य केवल एक-एक विषय को ग्रहण करना है। स्पर्श इन्द्रिय केवल स्पर्श का अनुभव करती है। घ्राण इन्द्रिय केवल सुरभिगंध और दुरभिगन्ध को ग्रहण करती है। चक्षु इन्द्रिय रूप को निहारती है और श्रोत्रेन्द्रिय केवल श्रवण ही करती है। चार इन्द्रियों का केवल एक एक विषय है। पर रसना इन्द्रिय के दो विषय हैं—एक पदार्थ के रस का अनुभव करना और दूसरा बोलना है। यह इन्द्रिय पाँचों इन्द्रियों से सबल है। जैसे कर्मों में मोहनीय कर्म प्रबल है। वैसे ही इन्द्रियों में रसना इन्द्रिय प्रबल है इसीलिए शास्त्रकार ने स्पष्ट शब्दों में कहा है—

'कम्माणं मोहणीय अक्खाणं रसनी।

बेइन्द्रिय से लेकर पञ्चेन्द्रिय तक सभी प्राणी बोलते हैं पर बोलने की कला सभी प्राणियों में नहीं होती। विवेकयुक्त जो व्यक्ति बोलना जानता है वह वचन पुण्य का अर्जन कर सकता है और अविवेक युक्त वाणी से पाप का अर्जन होता है। वाणी के द्वारा ही अठारह पापों में मृषावाद, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, परपरिवाद, माया-मृषावाद—ये पाप वाणी के द्वारा ही होते हैं। इसीलिये भारत के तत्वचिंतकों ने भले ही वे श्रमण भगवान महावीर रहे हों या

साध्वीरत्न कुसुमवती अभिनन्दन ग्रन्थ
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तथागत बुद्ध रहे हों अथवा महर्षि व्यास रहे हों, उन सभी ने जन-जन को यह प्रेरणा प्रदान की कि तुम अपनी वाणी का सदुपयोग करो। तुम्हारी वाणी विषवर्षिणी नहीं, अमृतवर्षिणी हो। पर खेद है कि हजारों वर्षों से इतनी पावन प्रेरणा प्राप्त होने पर भी मानव अपनी वाणी पर अभी तक नियन्त्रण नहीं कर पाया। वाणी के कारण ही अशान्ति, कलह, विग्रह, द्वेष के दावानल सुलग रहे हैं जिससे मानवता का वातावरण विषाक्त बन गया है। स्वर्गोपम भूमण्डल नरक के सदृश बन गया है। उन्हें यह स्मरण रखना होगा कि वे मृत्यु दूत नहीं हैं, जो विष उगलें। जो मानव जन्म मिला है जिस मानव जीवन की महत्ता के सम्बन्ध में आगम, वेद और त्रिपिटक एक स्वर से गा रहे हैं, मानव को अमृतपुत्र कहा है वह अमृत की वर्षा न कर यदि जहर की वर्षा करता है, वह मानव जीवन को कलंकित करता है। स्नेह और सद्भावना की सुमधुर वृष्टि करना ही उसका लक्ष्य होना चाहिये।

मानव जब जन्म लेता है तब से उसकी माँ उसे अमृत सदृश मधुर दूध पिलाकर उसका संपोषण करती है। दूध उज्ज्वल होता है, मधुर होता है। इसलिए माँ अपने प्यारे पुत्र को यह संदेश देती है कि वत्स ! मैंने तेरी जबान को दूध से धोयी है अतः मैं चाहूँगी कि तू मेरे दूध की लाज रखेगा। दूध की धवलिमा तेरे जीवन के कण-कण में व्याप्त हो, तेरी वाणी से अमृत झरे, तेरी वाणी मिश्री से भी अधिक मधुर हो। यदि वाणी में मधुरता है तो अन्य सारी मधुरता उसके सामने तुच्छ है।

एक बार बादशाह अकबर की राजसभा में विचार चर्चा चल रही थी कि इस विराट् विश्व में सबसे अधिक मधुर पदार्थ क्या है ? किसी ने कहा कि दही मीठा होता है, किसी ने कहा दूध मधुर होता है, किसी ने कहा गुड़ मधुर होता है तो किसी ने कहा शहद मधुर होता है। सबके अपने विचार थे। बादशाह अकबर ने बीरबल की ओर दृष्टि डाली और पूछा—तुम मौन क्यों हो ? बताओ, तुम्हारी दृष्टि से इस संसार में मीठी वस्तु क्या है ?

बीरबल ने कहा—जहाँपनाह ! सबसे मधुर है वाणी। वाणी की मधुरता के सामने अन्य पदार्थों की मधुरता कुछ भी नहीं है। बादशाह ने कहा—बता बीरबल, इसका प्रमाण क्या है ?

वीरबल ने कहा—जहाँपनाह समय पर आपको मैं यह सिद्ध कर बता दूँगा कि वाणी से बढ़कर अन्य कोई भी पदार्थ मधुर नहीं है। पन्द्रह-बीस दिन का समय व्यतीत हो गया। एक दिन बीरबल ने कहा—जहाँपनाह ! मेरी हार्दिक इच्छा है आप बेगम साहिबान के साथ मेरी कुटिया पर भोजन हेतु पधारें। बीरबल के स्नेह-स्निग्ध आग्रह को बादशाह टाल न सका और भोजन की स्वीकृति प्रदान कर दी। निश्चित समय पर बादशाह बेगम साहिबान के साथ बीरबल के यहाँ पर भोजन हेतु पहुँचे। बीरबल ने बादशाह के लिए विविध प्रकार के स्वादिष्ट पकवान बनाये थे तथा विविध प्रकार की नमकीन वस्तुएँ भी तैयार की थीं। भोजन करते-करते बेगम साहिबान तो मन्त्र मुग्ध हो गयी। भोजन की प्रशंसा करते हुए उसने बादशाह से कहा—इतना स्वादिष्ट भोजन तो अपने यहाँ भी नहीं होता। बीरबल ने कितना सुन्दर भोजन बनाया है। भोजन कर बादशाह आह्लादित मन से विदा हुआ। बादशाह के मुखारविन्द से भोजन की प्रशंसा सुनकर बीरबल मौन रहा।

बादशाह द्वार तक पहुँचा। बेगम पीछे चल रही थी। बीरबल ने अपने अनुचर को आदेश दिया कि दूध से उस स्थान को साफ कर देना जहाँ पर तुर्कणी बैठी थी क्योंकि वह स्थान अपवित्र हो गया है। बीरबल ने शब्द इस प्रकार कहे थे कि वे शब्द बेगम साहिबान के कर्ण कुहरों में गिर जाएँ और ज्योंही ये शब्द बेगम ने सुने उसका क्रोध सातवें आसमान में पहुँच गया, सारा भोजन जहर बन गया, आँखों से अंगारे बरसने लगे। उसने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बादशाह को कहा—देखो, सुना आपने, वह काफिर क्या बोल रहा है। उसने मुझे तुर्कणी कहा है और जहाँ मैं बैठी थी उस स्थान को उसने दूध से धोने को कहा है, उसके मन में कितना हलाहल जहर भरा पड़ा है। बादशाह ने सुना और साक्रोश मुद्रा में बीरबल को आवाज दी। बीरबल सनम्र मुद्रा में आकर खड़ा हुआ।

बादशाह ने सरोष मुद्रा में बीरबल से पूछा—तुम्हें इस प्रकार के शब्द बोलते हुए शर्म नहीं आयी? तुमने हमें भोजन इसलिए कराया कि हमारा अपमान हो। आज तुम्हारे मन का परदा फाश हो गया और तुम्हारा असली स्वरूप उजागर हो गया कि तुम्हारे मन में हमारे प्रति कितनी नफरत है। दिल चाहता है कि तलवार से तुम्हारा सिर उड़ा दिया जाए।

बीरबल ने अपनी आकृति इस प्रकार बनायी कि मानो उसे कुछ पता ही नहीं हो। उसने कहा—जहाँपनाह! मैंने ऐसी क्या बात कही है जिसके कारण आपश्री इतने नाराज हो गये हैं।

बादशाह ने कहा—हुँ, अब भोला बन रहा है। तेने तुर्कणी नहीं कहा? तेने उस स्थान को दूध से धोने के लिए नहीं कहा?

हाँ-हाँ भूल गया पर वे शब्द मैंने इसलिए कहे थे कि आपश्री ने उस दिन राजसभा में कहा था कि बीरबल सिद्ध कर बता कि वाणी सबसे अधिक मधुर कैसे है? जहांपनाह! मैंने बढ़िया से बढ़िया आपश्री को भोजन करवाया, जिसकी आप स्वयं ने और बेगम साहिबान ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। पर वह सारा भोजन एक क्षण में एक शब्द में जहर बन गया। वाणी की कड़ुवाहट ने भोजन को विष में परिवर्तित कर दिया। अब तो आपश्री को यह विश्वास हो गया होगा कि वाणी से बढ़कर इस विश्व में अमृत भी नहीं है, और न जहर ही है मधुर वाणी अमृत है तो कटु वाणी जहर है।

वाणी के दुरुपयोग के कारण ही महाभारत का युद्ध हुआ। परिवार, समाज और राष्ट्र में जब भी सघर्ष की चिनगारियाँ उछलती हैं। उसका मूल कारण होता है वाणी पर नियन्त्रण का अभाव। वाणी और पानी दोनों ही निर्मल और मधुर होने पर ही जन-जन को आकर्षित करते हैं। समुद्र में पानी की कोई कमी नहीं है पर वह पानी इतना अधिक खारा है कि कोई भी प्राणी उस पानी को पीकर अपनी प्यास शान्त नहीं कर सकता। समुद्र में जितनी स्टीमरें चलती हैं, नौकाएं घूमती हैं। उनमें बैठने वाले यात्रीगण अपने साथ पानी लेकर जाते हैं और कई बार जब पीने का पानी समाप्त हो जाता है तो उन नौकाओं में रहने वाले व्यक्ति छटपटा कर अपने प्रिय प्राणों को त्याग देते हैं पानी में रहकर के भी वे प्यास से छटपटाते हैं इसका मूल कारण है खारा पानी पीने योग्य नहीं है। वैसे ही खारी वाणी भी दूसरों के मन को शान्ति नहीं प्रदान कर सकती।

मेरी सद्गुरुणी श्री सोहनकुँवर जी महाराज अपने प्रवचनों में कहा करती थीं कि पहले बोले—श्रावकजी थोड़ा बोले, दूसरे बोले—श्रावकजी काम पड़या बोले, और तीसरे बोले—श्रावकजी मीठा बोले। हमारे प्राचीन जैनाचार्यों ने श्रावक के मार्गानुसारी के गुण बताये हैं उनमें एक गुण है—वाणी की मधुरता। श्रावक और साधक की वाणी अत्यंत मधुर होती है। वह सत्य को भी मधुर वाणी के द्वारा ही कहता है हमारे शरीर में जितने भी अंगोपांग है उन सभी में हड्डियाँ हैं हड्डियाँ कठोरता की प्रतीक हैं पर जबान में हड्डी नहीं है। क्यों नहीं है। इसका उत्तर एक शायर ने दिया है—

कुदरत को नापसन्द है सख्ती जुबान में
इसलिए पैदा न हुई हड्डी जुबान में।

यदि हम आगम साहित्य का अध्ययन करें तो हमें यह सहज ज्ञात होगा कि महापुरुषों की वाणी में कितना माधुर्य था? तीर्थंकर प्रत्येक साधक को 'भो देवाणुप्पिया' शब्द से सम्बोधित करते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान के मुखारबिन्द से अपने लिए भक्त देवताओं का वल्लभ शब्द सुनता है तो उसका अन्तर्हृदय बांसों उछलने लगता है वह सोचता है मैं कितना सौभाग्यशाली हूँ कि प्रभु ने मुझे देवताओं के वल्लभ शब्द से पुकारा है। प्राचीन युग में पत्नी पति को आर्यपुत्र कहकर सम्बोधित करती थी और पति भी देवी कहकर पत्नी को सम्बोधित करता था। एक दूसरे के प्रति कितनी शिष्ट भाषा का प्रयोग होता था। पर आज सुसभ्य कहलाने वाले लोग किस प्रकार शब्दों का प्रयोग करते हैं। वार्तालाप के प्रसंग में अपशब्दों का प्रयोग करना, गाली-गलौच देना आज सामान्य बात हो गई है। यदि आपने अपनी पत्नी को गधी कहा है तो आप स्वयं गधे बन गये। इसलिए शब्दों का प्रयोग करते समय विवेक की अत्यधिक आवश्यकता है।

भारत के महामनीषियों ने वाणी की तीन कसौटियाँ बताई हैं, सत्यं, शिवं, सुन्दरम्। सबसे प्रथम हमारी वाणी सत्य हो पर वह सत्य कटु न हो, अप्रिय न हो, इसलिए दूसरी कसौटी "शिव" की रखी गई है। हमारे मन में सत्य के साथ यदि दुर्भावना का पुट हो तो वह सत्य शिव नहीं है और साथ में सत्य को सुन्दर भी होना आवश्यक है। सौन्दर्य वाणी का आभूषण है। तन का सौन्दर्य कुदरत की देन है। यदि किसी का चेहरा कुरूप है तो वह क्रीम, पाउडर आदि सौन्दर्यवर्द्धक साधन का उपयोग करेगा तो उसका चेहरा बहुरुपिये की तरह और भद्दा बन जायेगा। कृत्रिम सौन्दर्य प्रसाधन से वास्तविक सौन्दर्य निखरता नहीं है। आप जानते हैं श्री कृष्ण वासुदेव का रंग श्याम था किन्तु उनकी वाणी इतनी मधुर थी कि लोग उनकी वाणी को सुनने के लिए तरसते थे। जब कृष्ण बाँसुरी की मुरली तान छेड़ते तब गायें भी दौड़कर उनके आसपास एकत्रित हो जाती थीं। गोपियों के झुण्ड के झुण्ड उनके पास पहुँच जाते थे। इसका एकमात्र कारण उनकी वाणी से अमृत स्रोत फूटना था। दुर्योधन का वर्ण गौर था किन्तु उसकी वाणी जहर उगलती थी इसलिए वह जन-जन का घृणा का पात्र बना। आप तन के रंग को बदल नहीं सकते, पर वाणी को बदलना आपके स्वयं के हाथ में है। आप वाणी को बदलकर जन-जन के प्रिय पात्र बन सकते हैं। मूर्ख व्यक्ति वह है जो बोलने के पश्चात् सोचता है कि मैं इस प्रकार के शब्द नहीं बोलता तो संक्लेश का वातावरण तो उपस्थित नहीं होता। यदि मैं वाणी पर नियन्त्रण रख लेता तो कितना अच्छा होता। पर समझदार व्यक्ति वह है जो बोलने के पूर्व उसके परिणाम के सम्बन्ध में सोचता है वह इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग नहीं करता, जिससे किसी के दिल में दर्द पैदा हो, हृदय व्यथित हो। इसीलिए मैंने अपने प्रवचन के प्रारम्भ में आपसे कहा कि वाणी अत्यन्त पुण्यवानी के पश्चात् प्राप्त हुई है। जिस वाणी को प्राप्त करने के लिए आत्मा को कितना प्रबल पुरुषार्थ करना पड़ा है? कितने कष्ट सहन करने पड़े हैं जो इतनी बहमूल्य वस्तु है हम उसका दुरुपयोग तो नहीं कर रहे हैं यदि दुरुपयोग कर लिया तो बाद में अत्यधिक पश्चात्ताप करना होगा।

अन्त में मैं इतना ही कहना चाहूँगी कि यदि आपकी वाणी अमृतवर्षण नहीं कर सकती है तो आप मौन रहें। मौन सोना है और बोलना चाँदी है। मौन शान्ति का मूलमन्त्र है और बोलना विवाद का कारण है। मौन के लिए कुछ भी पुरुषार्थ करने की आवश्यकता नहीं। मौन से आप अनेक विग्रहों से बच सकेंगे और दीर्घकाल तक यदि आपने मौन साधना कर ली तो आपकी वाणी स्वतः सिद्ध हो जायेगी। योगियों की वाणी इसीलिए वचनसिद्ध थी कि वे लम्बे समय तक मौन रहते थे। यदि बोलना ही है तो विवेकपूर्वक बोलें जिस वाणी से सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त के तथा समता, नम्रता, सरलता के सुमन झरें। आशा है आप वाणी का महत्व समझेंगे और अपने जीवन में मधुर बोलने का और कम बोलने का अभ्यास करेंगे। ता आपकी वाणी में एक जादू पैदा होगा और वह जादू जन-जन के मन को मुग्ध कर देगा। □

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org